

Shri Raghunatha Temple MSS. Library,
JAMMU

५५७३
१०३३

No.

क

Title

सूर्य का मन्त्र (सोमना)

Author

Extent

१२ पन्ना

Age

Subject

२
सोमना

5513
-12
सूर्यका मंत्र

नं. ६३३

ॐ श्रीसूर्याय नमः ॥ दोहा ॥ ॐ प्रतिश्रुच
रजमनकुसलबसैनादेवप्रणार ॥
किंजीतैगोश्नद्रतेमनमदकरतवि
चार ॥ ॥ चौपाई ॥ सैनादेवीमदवि
साला ॥ निरषभईविससैदोउवाला

२०१०३२ का

दोहा का

मन्त्र

१२ पंक्ति

शुद्धि

विशेष

सू.

१

करतविचारतदा मिलदोऊ॥ विजे
दोईकीजैकृतसोऊ॥ ३६ देवतासूर्य
अराधादि॥ करिप्रसन्नकारजसभ
साधादि॥ महातेजसेष्टयवोपाला
सिमरादिदमताकोततकाला॥ ३७

देवविनुसिधितहोई॥ कोटिउपाशक
रहंसते॥ मनवचकर्मउदमयह
कोटो॥ प्रथमसरमजनकरिदीनो॥
दोहा॥ संजवकरितनसचिकीउ
संध्यासमरतकोन॥ रविसन्मुखक

स
२

रजोरिकै बाढ़ होवै मत दीन ॥ ३ ॥
चौपाई ॥ जा प्रसन्न सरज का को तो
प्रथमै नमस्कार कर ली तो ॥ अस
तन करी अनेक प्रकारा ॥ तम ही
शिव जग का करताया ॥ महा प्रता

पवानकसपसूत॥ सृष्टिकरततेज
सीमहाउत॥ दमरादैप्रणामतम
कोश्रव॥ सिडकरोकारजदमके
सव॥ तमप्रतिपालकसकलज
गतको॥ मनवांछतफलदेतभग

सू.
३

तितको॥ पृथिवीजो जनको दिप
चासा॥ जहात हात मम हा प्रकासा
दोहा॥ सहस्र किरण तमरे विषे
सदा आनंदत भाई॥ जो तम को थ-
करो दि॥ सभ गे घद जारि जाई ॥ ५ ॥

वीणा॥ तमहीहोसमष्टयवीणाला
कृपात्रयवरितेजविशाला॥ तमको
जानसमरयसकलविधि॥ कीउप्र
णामकरोहमरीसिधि॥ जैसेमन
साकरिकोईधिआवति॥ सोतमप

सू.
४

द्वंछतफलपावत॥ ब्रह्माविस्मम
देस्यराश्रयत॥ इंद्रादिकजयतप
करिस्मायत॥ किंनरगाणगंधर्वदेव
नर॥ सभसेवततकदोशभागेधर॥
जोतमकरनजगजप्रकासा॥ सक

लगेषधीहोशिवनासा॥ ६॥ दोहा॥ अं
धकारहोवेहेतगरमादिकबनस
केतैत॥ एषवीकाआधारतमकपा
त्रमससदेत॥ ७॥ चौपाई॥ सहस्रक
नतमरेसुषमादी॥ तमसारथीअव

सू.
५

रकोऊनादी॥ तसरेनाम अनंत श्रवा
रा॥ सिमरेहाता सिधि जैकमा॥ प्रथ
मैसूरजनामतमारा॥ ताकोसदाप्र
णामदमारा॥ पुनिआदितनामत
मजाता॥ देतभगतिनवांछातेदान

जो नर सदा दिवा कर सेव दि॥ पुत्र दान
ता हो छिन लेव दि॥ मेहनत कर निभा
स करि ध्याव दि॥ सत्र मित्र हो दिज स
पाव दि॥ ८॥ दोहा॥ सिव ता को सिम
रन को ई ब्रध दरव को हो ई॥ पविही

सू.
६

कोई अराधही अति सधपावदि सोई
चोपाई॥ अवतामक सपकलते
रो॥ रतिमदि विजै कर जस मेरो॥
भानता मत मारा जस वंता॥ जोत
रप्पाइ होइ बाधि वंता॥ फुल सह

समुपनामतमारा॥ सेवतमंगल
विविधिप्रकारा॥ दितमणिनामपु
रषजोसेवदि॥ सुषपावदिकीरत
जसलेवदि॥ पृथ्वीपालनामत
कथावदि॥ जोतहोश्याण्डसभजा

सु.
७

वादि॥ तमरेतामअनेतअपारा॥ इद
सकदैप्रगाटसंसाया॥ १०॥ दोहा॥ त
मरेदादसनामरदपडेसतैतरको
॥ मनवाछतफलपावईसिद्धिम
नोरथहो॥ १॥ चौपाई॥ पुत्रअर्थसि

मरेतयिकोई॥ ताकेप्रदसंतततव.
दोई॥ धनअर्थीततछिनधनआवे
भजैभोगादितसरपुरजावे॥ जयअ
र्थजोतकैथावे॥ विजैदोभरतिसज
सचछावे॥ जिदजैसीमनसाकवि.

सू.
८

ध्यायो॥ सो तम ते वां छत फल पायो
जो नम मरथ अराधि उत्तक को॥ दी
जै दान विजै रण मय को॥ नम स्का
र तम को हम कीनो॥ तम अंतर जा
मी सभा विधि चीनो॥ १२॥ दोहा॥ जो स

तति को नो कुसलवसति रावि भई कि
पाल ॥ दिन मणि सरत वंत तद्रवै चलि
आई यो तत काल ॥ १३ ॥ चौपाई ॥ भए प्र
सेन वचन भाषे रवि ॥ मागइ सो व
र दे गे कुसलव ॥ हाथ जोडवौ लै दी

सू.
१

ऊभाता॥ यहदमदेइकरइकसला
ता॥ संपतमषरथसोदमदीजे॥ आ
युधदेइकपाववकीजे॥ एथमदे
इवराविजेइरनि॥ करइआसीस
हनमरदलगाति॥ समसुषारथ

सरजमंगायो॥ कुसलवकोजिदप
रवेदायो॥ वलदीयोसारंगकपाक
र॥ सातवानदीयेफनमहावर॥ १५॥
दोहा॥ एयमनामसरकेकहोदीये
कपाकरसर॥ वदुदीयोरथसमस

सू
१०

बलवकुसकोप्रणमर॥५॥चौपाई
अगनिवानजलवानदीयोफुति॥
तीनोषद्दीयोतीछनप्रति॥सहा
सलवानजवदीतो॥सिलावानदे
सभइषछीनो॥ससलवानदीयाव

इरोरवि॥ अतिप्रतापकदिसकेत
नदीकवि॥ पवनवानदीनोदित
माणजव॥ भयप्रसन्नहोएकसल
वनव॥ सातवानदेसीआसतनके
करीअसीसांविजैहोईरतमो ॥

सु.
११

स्वर्गलोकफनिलोकपताला॥
तमसमसरसृजकोऊभूषाला॥
दोहा॥ सृजजं तं रथानभयो॥ ग
यो सोतिजधाम॥ रथचडिलवऊ
समसत्रगाहिचलैकरतसंगाम॥

१६

इति श्रीभारथपरवणे अस्रमेधव
षात ॥ संश्रुतध्याऊछतीसमोक
वटहकनजीअजान ॥ १७ ॥ इति श्री
सूर्यकामंत्रलवकुसुंशर्म ॥

12
१४२

